Note : Photos will be in Magenta Colour

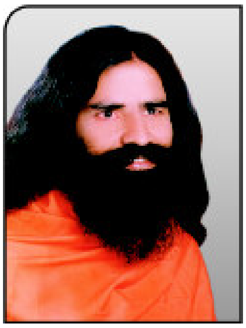

ओ३म्

भारत स्वाभिमान

एक आध्यात्मिक एवं सामाजिक आन्दोलन

अग्निपत्र

(भ्रष्ट व्यवस्थाओं के विरुद्ध क्रान्ति का शंखनाद)

मूल्य–इस "अग्निपत्र" की 100–1000 या 1 लाख प्रतियाँ छपवाकर/मुख्यालय से मंगवाकर वितरित करके भारत माता का ऋण चुकाएँ एंव अन्यों को छपवाने के लिए प्रेरित करें।

देश के नीति-निर्धारकों से देश की मुख्य 9 व्यवस्थाओं से जुड़े ज्वलन्त प्रश्न

भारत स्वाभिमान आन्दोलन की मुख्य 9 नीतियाँ एवं उद्देश्य

❶ स्वदेशी चिकित्सा व्यवस्था। ❷ स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था। ❸ स्वदेशी अर्थ व्यवस्था। ❹ स्वदेशी कानून व कर व्यवस्था। ❺ भारतीय संस्कृति की रक्षा। ❻ भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, मंहगाई व भूखमुक्त वैभवशाली भारत का निर्माण। ❼ ग्रामीण स्वावलम्बन। ❽ पर्यावरण की रक्षा व स्वच्छता। ❾ नियन्त्रित जनसंख्या।

यदि आपमें स्वदेश का थोड़ा-सा भी स्वाभिमान है और आपको अपने राष्ट्रीय दायित्वों व कर्त्तव्यों का अहसास है, यदि आपमें देश के प्रति कृतज्ञता का भाव है, तो हम उन तमाम देशभक्त संवेदनशील, सजग, जागरूक व कर्त्तव्यनिष्ठ भारतीयों से आह्वान करते हैं कि यदि राष्ट्र हित में उठायें गये ये प्रश्न आपको उचित लगते हैं तो आप भी इस आन्दोलन में सक्रिय रूप से सहभागी बनिए और इन भ्रष्ट नीतियों, कानूनों एवं व्यवस्थाओं को उखाड़ फैकने व देश को बचाने के लिए आगे आइए और एक सच्चे भारतीय होनें का फर्ज निभाइये और देश की व्यवस्थाएं चलाने वालों से राष्ट्रहित में ये प्रश्न पूछिये और जब तक समाधान नहीं हो जाता तब तक संघर्ष कीजिए, एकदिन विजय अवश्य मिलेगी और भारत की तकदीर व तस्वीर बदलेगी।

प्रश्न-1 (क) जब हम 90 से 99% बीमारियों को भारतीय योग व आयुर्वेद आदि भारतीय चिकित्सा पद्धतियों से ठीक कर सकते हैं तो फिर विदेशी चिकित्सा पद्धतियों की गुलामी को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में स्वीकार्यता क्यों ?

(ख) जब स्वदेशी चिकित्सा पद्धति से बी.पी व थाइराइड आदि 99% बीमारियों को ठीक (क्योर) किया जा सकता है तो अंग्रेजी दवाओं से बीमारियों को नियन्त्रित (कन्ट्रोल) करने के नाम पर प्रतिवर्ष 6 लाख करोड़ रुपये से अधिक की लूट क्यों और स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों का सरकारी स्तर पर तिरस्कार, अपमान, उदासीनता व उपेक्षा क्यों ?

प्रश्न-2 (क) जब योग शिक्षा से देश के बच्चों एवं युवाओं को संयमी, सदाचारी, बलवान, बुद्धिमान्, चरित्रवान्, पितृभक्त एवं राष्ट्रभक्त बनाकर नशा-वासना, हिंसा व अपराध से बचाया जा सकता है तो फिर यौन शिक्षा की वकालत क्यों ?

(ख) जब हम अपने देश के बच्चों को राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भारतीय भाषाओं-गुजराती, मराठी, बंगला, पंजाबी, उड़िया, असमिया, तमिल, तेलगू, कन्नड़ आदि में शिक्षा देकर डॉक्टर, इन्जिनियर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. व वैज्ञानिक आदि बना सकते हैं तो फिर विदेशी भाषा व षड्यन्त्रकारी मैकॉले की शिक्षा व्यवस्था की गुलामी क्यों ? और अपने देश की भाषाओं का अपमान क्यों ? भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 व 344 के अनुसार देश की भाषा में शिक्षा, शासन व न्यायव्यवस्था को तुरन्त लागू करके देश के करोड़ों लोगों के साथ हो रहा अन्याय तुरन्त बन्द होना चाहिए। अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी में काम करना हमारी मजबूरी थी। आज आजाद भारत में हमें भाषा, शिक्षा, स्वास्थ्य व अर्थव्यवस्था आदि की विदेशी गुलामी से बाहर निकलना चाहिये और सम्पूर्ण आजादी के साथ भारत की शासन, न्याय व समस्त नीतियों को तय करना चाहिए। देश में मात्र भाषा के कारण ही समस्त व्यवस्थाओं पर 1% लोगों का एकाधिकर व 99% लोगों पर अन्याय क्यों ?

(ग) जब एम.एल.ए., एम.पी. व मन्त्री आदि अपने बच्चों को अच्छे स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं और बीमार होने पर अपना व अपने परिजनों का इलाज अच्छे हॉस्पिटल में करवाते हैं, तो फिर देश के आम व गरीब आदमी के लिए अच्छे सरकारी स्कूल तथा अच्छे सरकारी अस्पताल क्यों नहीं ? ब्रिटेन, कनाडा आदि विश्व के अधिकांश सभ्य देशों में वहां के

जन-प्रतिनिधि सरकारी स्कूलों में ही अपने बच्चों को पढ़ाते हैं व सरकारी अस्पतालों में ही इलाज करवाते हैं, अतः वहां की शिक्षा व स्वास्थ्य की व्यवस्थाएं बहुत ही उन्नत स्तर की हैं, तो फिर यह व्यवस्था हमारे यहाँ क्यों नहीं हो सकती ? जब नेता व उच्चाधिकारी इन सरकारी संस्थानों से जुड़ जायेंगे तो सरकारी स्कूल व हॉस्पिटल एक दिन में ठीक हो जायेंगे और देश के आम नागरिक को शिक्षा व स्वास्थ्य की श्रेष्ठ व्यवस्थाएं सुलभ हो जायेंगी। एम्स जैसे सरकारी हॉस्पिटल व दिल्ली विश्वविद्यालय आदि में अच्छी स्वास्थ्य व शिक्षा की सुविधाएं इसलिए हैं क्योंकि वहाँ बड़े नेता व अधिकारियों का सीधा सम्बन्ध है।

प्रश्न-4 (क) जब स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था से देश का प्रतिवर्ष 20 से 30 लाख करोड़ रुपये बचाकर भारत को विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनाया जा सकता है, तो फिर वैश्वीकरण व औद्योगिकरण की गलत नीतियों से देश का आर्थिक शोषण व दोहन क्यों ? स्वदेशी अर्थव्यवस्था को नष्ट कर देश को गरीब, भिखमंगा, कंगाल बनाने का व लूटने का यह षड्यन्त्र क्या बन्द नहीं होना चाहिए ?

प्रश्न-4 (क) जो 34,735 कानून अंग्रजों ने अपने शासनकाल में हमें लूटने, हमेशा के लिए गुलाम बनाने तथा हम पर अत्याचार व शोषण करने के लिए बनाये थे, आजादी के बाद भी उन्हीं कानूनों को लागू करके, हम पर अत्याचार तथा हमारा शोषण व लूट क्यों ? तथा संविधान के अनुच्छेद 372(क) के अनुसार राष्ट्र हित में कानून व्यवस्थाओं में परिवर्तन क्यों नहीं ?

(ख) जब अनिवार्य मतदान का कानून बनाकर देश के लोकतन्त्र को बचाया जा सकता है और लोकतन्त्र के नाम पर चल रहे भ्रष्टाचार व षड्यन्त्र को पूर्णतः समाप्त किया जा सकता है, तो फिर अनिवार्य मतदान का कानून क्यों नहीं बनाते ?

(ग) यदि शराब व तम्बाकू बेचने वाली कम्पनियों पर नशा करके बीमार हुए लोगों के उपचार का खर्चा वसूलने का कानून बनाकर उन पर अंकुश लगाया जा सकता है तो फिर कुछ चन्द लोगों को रोजगार देने व व्यापार करके करोड़पति बनाने की एवज में लाखों लोगों को मौत के मुँह में सुलाने के षड्यन्त्र के खिलाफ कानून क्यों नहीं बनना चाहिए क्योंकि लुभावने विज्ञापन व गलतविचार देकर लोगों के मन में कृत्रिम भूख पैदा करके नशों की लत डालने के लिए ये कंपनियाँ सीधी जिम्मेदार हैं।

(ङ) पांच तरह के अपराधियों अर्थात् भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, आतंकवादी, मिलावटखोर तथा अत्यन्त जहरीला प्रदूषण फैलाकर लाखों-करोड़ों देशवासियों को टी.बी., केन्सर व अन्य प्राणघातक बिमारियों व मौत के मुंह में सुलाने वाले देश व देशवासियों की सुरक्षा को खतरे में डालने वाले इन लोगों को आजीवन कारावास या मृत्युदण्ड क्यों नहीं ?

(च) जब भ्रष्टाचारियों को फांसी देकर देश को लूटने से व आतंकवादियों को मृत्युदण्ड देकर देश को आतंक से बचा सकते हैं, जब माँ, बहन बेटियों की इज्जत से खिलवाड़ करने वाले बलात्कारी व दुराचारियों को मौत की सजा का कानून बनाकर उनकी इज्जत को बचा सकते हैं तथा जहरीला प्रदूषण फैलाकर देश को बीमारियों व मौत के मुंह में सुलाने वाले लोगों के खिलाफ कानून बनाकर देश के लोगों की प्राणघातक रोगों व मौत से रक्षा कर सकते हैं तो फिर इनके खिलाफ मृत्युदण्ड का प्रावधान क्यों नहीं ?

तो क्या इसका मतलब यह निकाला जाये कि सरकारों व व्यवस्थाओं को चलाने वाले लोगों की नीतियाँ व नीयत ठीक नहीं है और कहीं सरकार व शासन ही तो इन अपराधियों को संरक्षण नहीं दे रहें हैं ?

(छ) जब मात्र 2% ट्रान्जैक्शन 'कर' (टैक्स) लगा करके देश के विकास के लिए 18 लाख 20 हजार करोड़ रुपये जुटाए जा सकते हैं तो फिर 64 प्रकार के गैर जरुरी कर (टैक्स) लगाकर देश के लोगों की मेहनत की कमाई का लगभग 50% हिस्से को लूटने का षड्यन्त्र क्यों ?

प्रश्न-5 (क) जब भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म व संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी सार्वभौमिक, वैज्ञानिक एवं सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है और हमारे सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चिन्तन में कहीं भी न्यूनता व अपूर्णता नहीं है तो फिर विदेशी संस्कृति, सभ्यता की आवश्यकता व गुलामी क्यों ? तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन व प्रोत्साहन के लिए प्रतिबद्धता क्यों नहीं ?

प्रश्न-6 (क) पूरे भारत की बेरोजगारी, गरीबी व भूख को दूर करने के लिए हमें लगभग 50 लाख करोड़ रुपये की आवश्यकता है। इस धन से हर एक गाँव में एक आदर्श विद्यालय, कुछ लघु उद्योग तथा प्रत्येक जिले में एक औद्योगिक परिसर तथा एक विश्वविद्यालय बनाना चाहिए तथा इस पूरे विकास अर्थात् विद्यालय व उद्योग आदि में 50 से 80% सहभागिता (Share) गरीबी, मजदूर व किसानों को देना चाहिए। इस व्यवस्था से देश में एक भी व्यक्ति बेरोजगार, गरीब व अशिक्षित नहीं रहेगा। ये 50 लाख करोड़ रुपये प्राप्त करने के निम्न दो मुख्य स्रोत हमारे पास हैं—

(ख) भ्रष्टाचार करके देश का स्विस बैंकों में जमा 72 लाख 80 हजार करोड़ रुपये तथा अन्य देशों में जमा स्वदेशी धन वापस लाकर इस देश को एक ही दिन में बेरोजगारी, गरीबी व भूख से मुक्त किया जा सकता है और प्रत्येक जिले को विकास के लिए 12 हजार 133 करोड़ 33 लाख रुपये उपलब्ध कराये जा सकते हैं तो विदेशों में जमा अपने देश का यह पैसा देश में लाकर देश को समृद्ध क्यों नहीं बनाना चाहिये ?

(ग) प्रतिवर्ष राज्य एवं केन्द्र स्तर पर बनने वाले लगभग 20 लाख करोड़ रुपये (वर्ष 2008-09 में सरकार का बजट 8 लाख 16 करोड़ तथा राज्य स्तर का बजट 9 लाख 9 हजार 444 करोड़ 75 लाख रुपये है) के बजट में से लगभग 10 लाख करोड़ रुपये भ्रष्टाचार करके कुछ बेईमान नेताओं व कुछ भ्रष्ट अधिकारियों के द्वारा लूट लिया जाता है। प्रतिवर्ष ईमानदारी से यदि ये 10 लाख करोड़ रुपये खर्च किये जायें तो देश से मात्र 5 वर्षों में ही गरीबी, बेरोजगारी व भूख को मिटाया जा सकता है।

(घ) यदि भ्रष्टाचार को खत्म करके और सब देशवासियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करा करके आत्म सम्मान, सुख व स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार उपलब्ध कराया जा सकता है तो फिर गुलामी, भूख, अपमान, लाचारी व बेबसी के साथ करोड़ों देशवासी जीने को मजबूर या विवश क्यों?

(घ) जब भारतीय रिजर्व बैंक बड़े नोटों की प्रिन्टिंग बन्द करके तथा 500 व 1000 रुपये के पुराने छपे हुए नोटों को वापस लेकर एक दिन में भ्रष्टाचार, काले धन व नकली करेंसी की समस्या का समाधान कर सकता है तो फिर भ्रष्टाचार को बढ़ाने के लिए बड़े नोटों की छपाई क्यों?

प्रश्न-7 (क) जब किसानों को गोबर आदि की अच्छी खाद व सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराकर शुद्ध खाद्यान्न, खाद्यतेल, शाक-सब्जियाँ व फलादि पैदा किये जा सकते हैं तो फिर सरकार की ओर से प्रतिवर्ष 1 लाख 18 हजार करोड़ रुपये से अधिक की सब्सीडी के नाम पर भ्रष्टाचार का षड्यन्त्र करके हमारे खेतों में फर्टिलाइज़र्स व पैस्टीसाइड्स का जहर डालकर धरती को बंजर क्यों बनया जा रहा है और विष भरे आहार एवं शाक-सब्जियों से हमारे लीवर, किडनी व हृदय आदि को खराब करके जिन्दगी को टी.बी. व कैंसर आदि रोगों की तरफ क्यों धकेला जा रहा है?

(ख) जब स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था, जल-प्रबन्धन व ग्रामीण-स्वावलम्बन की नीति अपनाकर हम देश की पूंजी में प्रतिवर्ष 5 से 10 लाख करोड़ रुपये की वृद्धि करके देश को आर्थिक रूप से समृद्ध व शक्तिशाली बना सकते हैं तो फिर ग्रमीण-स्वावलम्बन की उपेक्षा क्यों?

प्रश्न-8 (क) जब पर्यावरण को शुद्ध करके अच्छा आहार, शुद्ध जल एवं शुद्ध वायु देशवासियों को मिल सकती है और राष्ट्रीय स्तर पर कचरा प्रबन्धन की स्वस्थ नीति को अपना करके हम देश को गन्दगी से मुक्त बना सकते हैं तो फिर देश की पवित्र नदियों (गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी आदि) में फैक्ट्रियों व सीवरेज के मल-मूत्र आदि की गंदगी क्यों?

प्रश्न-9 (क) जब नियन्त्रित जनसंख्या की नीति से देश को बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव व हिंसा से मुक्त करके समृद्ध व शक्तिशाली बना सकते हैं, तो फिर नियन्त्रित जनसंख्या की नीति, कानून व व्यवस्था क्यों नहीं?

गुलामी छोड़ो, देश बचाओ

पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे, अब हम कहीं न कहीं राजनैतिक पार्टियों व कुछ राजनैतिक व्यक्तियों के गुलाम से बनकर रह गए हैं। याद रखना यदि किसी राजनैतिक पार्टी की नीयत, नीतियाँ सोच व विचार देशहित में नहीं हैं तो उस पार्टी व व्यक्ति को छोड़ दीजिये क्योंकि देश से बढ़कर पार्टी या व्यक्ति नहीं है। तुम किसी राजनैतिक पार्टी या व्यक्ति के बंधक या गुलाम बनकर नहीं रहना। यदि मैं और ये मेरा संगठन भी देशहित में काम ना करें तो मुझे और मेरे इस संगठन को भी छोड़ देना।

देशभक्त पत्रकारों, लेखकों व बुद्धिजीवियों से आह्वान

हम देशभक्त लेखक, पत्रकार व बुद्धिजीवियों से आह्वान करते हैं कि यदि भारत-स्वाभिमान आंदोलन की हमारी नीतियों से आप सहमत हैं तो राष्ट्रहित के इस अभियान में आप भी हमारे साथ खड़े होकर इस क्रान्ति का समर्थन कीजिए और एक स्वस्थ, समर्थ, संस्कारवान् व वैभवशाली भारत के निर्माण में सहयोग दीजिए।

उठो जागो भ्रष्ट व्यवस्थाओं व भ्रष्टाचार को मिटाकर यश व मुक्ति प्राप्त करो

भारत से भ्रष्ट व्यवस्थाओं व गलत नीतियों का अन्त तो अब सौ प्रतिशत सुनिश्चित है। भगवान् ने आपको निमित्त बनने का सौभाग्य दिया है यदि तुमने यह पुण्य कार्य नहीं किया तो–“**विनाऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे**” (गीता)। इस पुण्य कार्य का यश किसी और को मिलने वाला है। अतः– **तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।**
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥ (गीता 11-33)

अतः उठो! जागो! और इस पाप का अन्त करके यश को प्राप्त करो। इस पाप का अन्त तो स्वयं ईश्वरीय शक्ति ही कर रही है। उसी ईश्वर ने तुम्हें भी निमित्त बनाया है, इस अवसर को हाथ से मत जाने दो। यह जीवन भगवान् की भक्ति व राष्ट्रभक्ति के लिए मिला

है। अतः **हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जीत्वा वा भोक्ष्यसे महीम्** (गीता) अर्थात् राष्ट्र आराधना करते हुए जीवो, यही एकमात्र मुक्ति का मार्ग है तथा ऐसा करते हुए यदि प्राणों की आहुति भी देनी पड़े तो भी नहीं घबराना क्योंकि पूर्ण पवित्रता के साथ भगवान् का भजन व राष्ट्र का सृजन करते हुए तुम मर भी जावो तो गीता के अनुसार तुम्हें स्वर्ग या मुक्ति ही मिलने वाली है। यही मुक्ति की युक्ति है, इसमें कोई संशय नहीं।

मेरी प्रतिज्ञा

1. मैं जीवन में कभी भी किसी भी तरह का राजनैतिक पद ग्रहण नहीं करुँगा यह मेरी भीष्म प्रतिज्ञा है। परन्तु राष्ट्रहित में देशभक्त, ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों को सत्ताओं के शीर्ष पर स्थापित करने के लिए अपने पवित्र राष्ट्रधर्म का निर्वहन अवश्य करुँगा।
2. मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व में मुझे अपना वतन दिखता है। मेरे वतन से मेरा तन है। मेरे हृदय, मन, मस्तिष्क, अस्थियाँ, मांसपेशियाँ व रक्त की एक-एक बूँद मैंने देश की मिट्टी से पायी है अतः जब तक देह में प्राण रहेगा तथा खून की आखिरी बूंद शेष रहेगी, मैं तब तक देश के लिए काम करुँगा। देश के लिए जिऊँगा तथा देश के सम्मान व स्वाभिमान के लिए मुझे अपने प्राणों की भी आहुति देनी पड़े तो भी पीछे नहीं हटूँगा।
3. मेरी मातृभूमि से मुझे वैसा ही प्यार है, जैसा मेरी माँ, बहन, बेटी या गुरु से होता है। मेरा राष्ट्र मेरा सर्वस्व है। देश न होता तो मैं नहीं होता। मैं पहले भारतीय हूँ बाद में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई हूँ। मैं भारत का स्वाभिमान किसी भी कीमत पर कभी भी नहीं मिटने दूंगा। देश से बड़ा कुछ भी नहीं होता मेरा तन, मन व धन सब मेरे वतन से है।

हमारा ध्येय वैभवशाली भारत का निर्माण

हम देश के 6,38,365 गाँवों व शहर के प्रत्येक घर व व्यक्ति तक भारत-स्वाभिमान की नीतियों व उद्देश्यों का संदेश लेकर जायेंगे और एक स्वस्थ, समर्थ, संस्कारवान् व शक्तिशाली भारत बनाकर ही दम लेंगे। वर्ष 2009-2010 में भारत-स्वाभिमान के मुख्यालय पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में हम लगभग ढ़ाई लाख देशभक्त व कर्त्तव्यनिष्ठ भाई-बहनों को योग से आरोग्य एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा देकर उनको मुख्य योगशिक्षक एवं भारत-स्वाभिमान के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता के रूप में तैयार करेंगे। ये ढ़ाई लाख राष्ट्रभक्त व जागरूक योगी भाई-बहन सम्पूर्ण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में लगभग 9 लाख 50 हजार अपने जैसे स्वाभिमानी विशिष्ट सदस्य एवं कार्यकर्त्ता सदस्य तैयार करेंगे। इस प्रकार कुल लगभग 11 लाख 50 हजार योगी भाई-बहन देश को निरोगी व निर्व्यसनी बनाते हुए उनको राष्ट्रवाद व अध्यात्मवाद का संदेश देने के साथ-साथ भारत-स्वाभिमान की नीतियों के बारे में बतायेंगे। हमारा एक देशभक्त व ईश्वरभक्त योगशिक्षक देश के लगभग 1000 योगी भाई-बहनों को योग कराता हुआ उनको भारत-स्वाभिमान के साथ जोड़ेगा। इस कार्य योजना के तहत देश के अन्तिम व्यक्ति तक अर्थात् 115 करोड़ लोगों तक हम योग और भारत-स्वाभिमान का संदेश पहुँचायेंगे और यदि एक वाक्य में भारत-स्वाभिमान आंदोलन की व्याख्या करें तो योग से आरोग्य देकर देशवासियों के तन की रक्षा करेंगे तथा जाति, मज़हब, प्रान्त एवं भाषाओं की संकीर्णताओं में बटे राष्ट्र को योग से संगठित करके जनशक्ति का राजशक्ति पर नैतिक नियन्त्रण या अंकुश रखकर वतन की रक्षा करेंगे और लोकसत्ता से राजसत्ता को देश हित में स्वदेशी नीतियों व व्यवस्थाओं को लागू करवाने के लिए बाध्य करेंगे और हम आधी-अधूरी आजादी के स्थान पर सम्पूर्ण आजादी के साथ जीयेंगे। इस प्रकार यह हमारा पूरा आंदोलन कोई काल्पनिक भ्रम या सपना नहीं अपितु एक व्यवहारिक व यथार्थ से जुड़ा हुआ शाश्वत सत्य है। और सत्य हमेशा विजयी होता है– **"सत्यमेव जयते"।**

सब प्रश्नों का एक समाधान **भारत-स्वाभिमान**। अतः आइए आप स्वयं इस आध्यात्मिक व सामाजिक आंदोलन से जुड़िए और अपने अन्य मित्रों व परिजनों को इस ऐतिहासिक अभियान व क्रान्ति से जोड़कर मातृभूमि के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कीजिए।

विशेष : भारत-स्वाभिमान की नीतियों व उद्देश्यों को पूरे तथ्यों, आंकड़ो के साथ समझने व आंदोलन का पूर्ण विवरण जानने के लिए "सम्पूर्ण आजादी का शंखनाद" पुस्तक जिसकी कीमत मात्र 10 रुपये है उसको स्वयं अवश्य पढ़िए व अन्यों को पढ़ने के लिए प्रेरित कीजिए।

मुख्यालय : पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट, महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन : 01334-240008, 248888, 248999, 246737 फैक्स : 01334-244805, 2400664
ई-मेल : divyayoga@rediffmail.com , info@divyoga.com वैबसाइट : divyayoga.com

स्थानीय पता : -

निवेदन : इस "अग्निपत्र" को भारत की समस्त भाषाओं में किसी के भी सौजन्य से प्रकाशित करा सकते हैं तथा उसका नाम भी "अग्निपत्र" के अन्त में सौजन्य के रूप में स्वयं छाप सकते हैं अथवा मुख्यालय से सभी भारतीय भाषाओं में अपने नाम से प्रतियाँ छपवाकर मंगवा सकते हैं।